ISBN: 978-81-974088-0-9

13. वर्तमान समाज में दिव्यांगो की परिवारिक समस्या

प्रिया सिंह

(शोधार्थी)
कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर (छ.ग.)

प्रस्तावना –

समाज में दिव्यांग बालकों की शिक्षा वर्तमान में एक समस्या है। इस समस्या के समाधान के लिए मनोवैज्ञानिक भी सतत् प्रत्यनशील हैं। कुछ वर्षों के पूर्व दिव्यांग बालकों को न तो पर्याप्त सम्मान मिल पा रहा था और न ही उनकी शिक्षा की कोई अच्छी व्यवस्था थी परंतु अब प्रशासन द्वारा दिव्यांग बालकों की दशा को सुधारने तथा समाज में सम्मान दिलाने के लिए शिक्षा के माध्यम से काफी प्रयास किये जा रहे हैं, जिसके फलस्वरूप शैक्षिक परिवर्तन ने शैक्षिक समस्याओं, नवीन ज्ञान एवं शैक्षिक तकनीक के माध्यम से शैक्षिक प्रगति के नूतन आयाम प्रस्तुत किये हैं। परिवर्तन की इस तीव्र व गत्यात्मक प्रक्रिया ने ''विशिष्टीकरण'' की माँग को जन्म दिया है, अतः दिव्यांग बच्चों के लिए राहायताओं, नवीन उपकरणों व यंत्रों व नवीन प्रणालियों को विकसित रूप प्रदान किया जा रहा है। दिव्यांग बालकों की शिक्षा के प्रति आज विश्व समुदाय जागृत हो चुका है। इस समस्या के समाधान के लिए वैश्विक स्तर पर प्रयास किये जा रहे हैं। इन बालकों के प्रति लोगों के मन में बदलाव आया है। इन बालकों के विकास हेतु समुचित शिक्षा का प्रबन्ध किया जा रहा है। राष्ट्रीय दिव्यांग एवं पुनर्वास सूचना केन्द्र द्वारा दिव्यांग व सम्बद्ध क्षेत्रों के बारे में व्यापक संचार योजना तैयार की गयी है।

समाज का अर्थ –

समाजशास्त्र मे समाज का अर्थ एक विशेष अर्थ मे लिया जाता हैं। समाजशास्त्र मे व्यक्तियों के मध्य पाये जाने वाले सामाजिक सम्बन्धों के व्यवस्थित स्वरूप को 'समाज' कहते हैं। समाज से आशय, व्यक्तियों के एक समूह से नही, वरन् उनके बीच संबंधों की व्यवस्था से हैं। समाजशास्त्र मे समाज को सामाजिक संबंधों का जाल कहा जाता हैं। व्यक्ति और व्यक्तियों के बीच पाए जाने वाले अनेक संबंध होते है जो एक समाज का निर्माण करते हैं। समाज मे मानव व्यवहार व संबंधों के नियंत्रण की व्यवस्था होती है जो समाज मे संगठन व उपेक्षित

स्थरिता प्रदान करने की दृष्टि से अत्यधिक महत्व रखती है। समाज मे नियंत्रण के यथा आवश्यक औपचारिक एवं अनौपचारिक साधन होते है जिनके पीछे समाज की शक्ति व सहमति होती है। ये नियंत्रण के साधन विभिन्न स्तरों व क्षेत्रों मे व्यक्ति व व्यक्ति, व्यक्ति व समूह तथा समूह एवं समूह के संबंध को नियंत्रित व निर्देशित करते हैं।

❖ समाज की परिभाषा –

'' समाज स्वयं संघ है वह एक संगठन और व्यवहारों का योग है, जिसमे सहयोग देने वाले एक–दूसरे से सम्बंधित होते हैं।''

गिडिंग्स के अनुसार

'' समाज चलनों व प्रणालियों की, सत्ता व पारस्परिक सहयोग की, अनेक समूहों व भागों कि, मानव व्यवहार के नियंत्रणों और स्वाधीनताओं कि एक व्यवस्था हैं।''

मैकाइवर व पेज के अनुसार

'' यह व्यक्तियों का एक समूह नही हैं, अपितु विभिन्न समूहों के व्यक्तियों के बीच सम्बन्धों की व्यवस्था हैं।''

रायट के अनुसार

❖ दिव्यांग का अर्थ –

दिव्यांग या दिव्यांगजन का हिंदी में अर्थ दिव्यांग व्यक्तियों को संदर्भित करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है।

दिव्यांग शब्द के प्रचलन से पहले नियमित रूप से बातचीत में इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द दिव्यांग था, जिसका अर्थ था 'गैर–कामकाजी शरीर के अंग वाला व्यक्ति'। अंग्रेजी में दिव्यांग शब्द का अर्थ है 'दिव्य शरीर का अंग वाला व्यक्ति'।

दिव्यांग बालक को अक्षम बालक या अपंग बालक भी कहा जाता है। ऐसे बालक दैहिक रूप से दिव्यांग होते हैं। अपंग बालकों की संख्या लम्बी बीमारी से ग्रस्त बालकों की संख्या से अधिक होती है।

ऐसे बालकों की ओर सबका ध्यान जाता है। लगातार असफल रहने के कारण, ये बालक विद्यालय छोड़ जाते हैं। अपंग बालक और रोगी बालक दोनों ही विशिष्ट बालक कहलाते हैं। ऐसे विशिष्ट बालकों के लिये विशेष शिक्षा की आवश्यकता है।

❖ दिव्यांग की परिभाषा –

''कार्यक्षमता में कमी, जैसे कि देखने, चलने, सुनने या समस्या को हल करने की क्षमता में कमी का होना।''

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू. एच. ओ.)

''दिव्यांगता एक शारीरिक व मानसिक स्थिति के रूप में परिभाषित करती है जो व्यक्ति की गतिविधियों, इन्द्रियों और कार्यों को बाधित करती है।''

ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी

''दिव्यांगता एक शारीरिक, मानसिक, संज्ञानात्मक या विकासात्मक स्थिति है जो किसी भी व्यक्ति के किसी सामान्य दैनिक जीवन से जुड़े कार्य, बातचीत या गतिविधि को करने या उनमें शामिल होने की क्षमता को बाधित या सीमित करती है।''

मेरियम वेबस्टर के अनुसार

"एक शारीरिक या मानसिक स्थिति जो स्थायी या पुनरावृत हो और इस स्तर तक हो कि व्यक्ति के सामान्य जीवन की जरूरी गतिविधियों में बाधा उत्पन्न करे।"

कनाडा के कैनेडियन ह्युमन राइट्स एक्ट

❖ **दिव्यांग बालक का अर्थ –**

दिव्यांग बच्चा वह युवा व्यक्ति होता है जो शारीरिक या मानसिक रूप से दिव्यांग होता है जिससे उनके लिए वह काम करना कठिन हो जाता है जो अन्य बच्चे आसानी से कर सकते हैं।

इसमें बहरा या अंधा होना, बोलने या सीखने में परेशानी होना, या चलने–फिरने में कठिनाई होना शामिल हो सकता है। इन बच्चों को वे काम करने के लिए विशेष सहायता या उपकरण की आवश्यकता हो सकती है जो अन्य बच्चे बिना मदद के कर सकते हैं।

दिव्यांग बालक की परिभाषा –

'' वह बालक जिसका शारीरिक दोस्त उसे साधारण क्रिया में भाग लेने से रोकता है अथवा सीमित रखना है।"

क्रो और क्रो

''दिव्यांग बालक संज्ञानात्मक , विकासात्मक , बौद्धिक , मानसिक , शारीरिक , संवेदी या कई कारकों का संयोजन होता है।"

ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी

❖ **दिव्यांग बालकको आने वाली समस्या– मुख्यतः दो तरह की समस्या/बाधाएू होती हैं :–**

1. भौतिक समस्या/बाधाएँ **2. मानसिक समस्या/ बाधाएँ**

1. भौतिक बाधाएँ :–भौतिक बाधाओं से तात्पर्य भौतिक वातावरण की बाधाओं से है जैसे सीढ़ियों के विकल्प के रूप में रैम्प न होना, शौचालय के नल, हैंडल आदि पहुँच में न होना, मॉडीफाइड टायलेट का न होना बैठने के लिए अनुकूलित टेबल कुर्सी का अभाव होना, कक्षा के दरवाजों का इतना संकरा होना कि बच्चे की व्हील चेयर अंदर ही न जा सके आदि।

2. मानसिक बाधाएँ :–परिवार, समुदाय शैक्षिक प्रशासकों में रूढ़िवादी व नकारात्मक सोच आदि इन बच्चों के विकास में सबसे बड़ी बाधाएं हैं जैसे–

- माता पिता सोचते हैं कि ऐसे बच्चे को स्कूल भेजने का क्या फायदा ये पढ़ नहीं सकते
- सामाजिक कार्यों में साथ नहीं ले जाते जिससे उनका सामाजिक विकास रूक जाता है

❖ वर्तमान समाज में दिव्यांग बालक की परिवारिक समस्या –

कई परिवार जिनके बच्चे दिव्यांग या विशेष जरूरतों वाले हैं, वे अपने बच्चे की देखभाल को चुनौतीपूर्ण लेकिन बेहद फायदेमंद बताते हैं। दूसरों को लगता है कि उनके बच्चे की देखभाल करना किसी दूसरे बच्चे की देखभाल करने से अलग नहीं है। परिवार अपनी देखभाल संबंधी जिम्मेदारियों के बारे में चाहे जो भी महसूस करें, यह पहचानना जरूरी है कि उनके पास अक्सर अपने बच्चे की जरूरतों के हिसाब से अतिरिक्त भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ होती हैं। यह प्राथमिक देखभाल करने वालों के लिए बेहद तनावपूर्ण हो सकता है ।यह जरूरी है कि आप परिवारों के तनाव और सेहत पर पड़ने वाले असर को समझें। वर्तमान समाज में दिव्यांग बालक की परिवारिक समस्या को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से जाना जा सकता है–

1. जनसंख्या –

बढ़ती जनसंख्या, घटते प्राकृतिक संसाधनों के कारण मनुष्य के बीच संसाधनों की प्राप्ति के लिए कठिन प्रतिस्पर्धा का दौर चल रहा है। सामाजिक असमानता, ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी, भौतिक संसाधनों और चिकित्सीय सुविधाओं के अभाव के कारण दिव्यांगों को पर्याप्त सुविधाएं नहीं मिल पाती है, जिसके कारण वे समाज की मुख्यधारा में सम्मिलित होने की बजाय और पिछड़ते जा रहे है।

2. मनोवृत्ति संबंधी बाधाएं –

समाज की पारंपरिक मानसिकता भी समावेशी शिक्षा में बाधा है। आम धारणा है कि दिव्यांग बच्चों को शिक्षित करना व्यर्थ है।

वे समाज और राष्ट्र के लिए कोई खास योगदान नहीं दे सकते। दिव्यांग बच्चों को मुख्यधारा के स्कूलों में प्रवेश नहीं दिया जाना चाहिए। इससे सामान्य बच्चों की शिक्षा में बाधा उत्पन्न होती है।

3. अपर्याप्त सहायता प्रणाली –

प्रशिक्षित कर्मचारी, डिजिटल पाठ्यपुस्तकें , अद्वितीय शिक्षण सामग्री और सहायक प्रौद्योगिकी जैसे अपर्याप्त संसाधन विभिन्न शैक्षिक आवश्यकताओं वाले छात्रों को सहायता प्रदान करने में अंतराल पैदा करते हैं। विशेष शिक्षा शिक्षकों और चिकित्सकों जैसे प्रशिक्षित व्यक्तियों की सीमित उपलब्धता, व्यक्तिगत सहायता योजनाओं के कार्यान्वयन में बाधा डालती है।

4. भेद–भावपूर्ण व्यवहार –

जैसा कि हम सभी जानते हैं, दिव्यांग बच्चों के प्रति पूर्वाग्रह और भेदभाव अभी भी देखा जाता है। बच्चे अक्सर रोजमर्रा की जिंदगी में भेदभाव का सामना करते हैं जो शिक्षकों और परिवार तक फैला हुआ है। शिक्षकों को भी दिव्यांग छात्रों के साथ भेदभाव करते देखा गया है। नतीजतन, समावेशी शिक्षा का सफल होना और भी मुश्किल हो गया है।

5. वित्तीय बाधाएं –

स्कूलों और शैक्षणिक संस्थानों में वित्तीय कमी और अव्यवस्थित बजट–निर्माण के कारण समावेशी शिक्षा नीतियों और कार्यक्रमों को लागू करने में असमर्थता होती है। इससे छात्रों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के प्रयासों में भी बाधा आती है। संसाधन प्रसंस्करण का असमान वितरण और समावेशी प्रथाओं में अपर्याप्त निवेश समुदायों पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

6. पाठ्यक्रम संबंधी बाधाएं –

समावेशी शिक्षा की सफलता में बिना तैयारी वाला पाठ्यक्रम एक और बड़ी बाधा बनकर उभरता है। पाठ्यक्रम की ऐसी विशेषताओं में लचीलापन, भिन्नता की कमी और पुरानी शिक्षण विधियों का उपयोग शामिल है।

इस तरह का पाठ्यक्रम बच्चों की अलग–अलग जरूरतों और रुचियों को ध्यान में नहीं रखता है, जिसमें उनकी अलग–अलग सीखने की शैली और गति शामिल है। नतीजतन, यह छात्रों को अपनी क्षमताओं और ताकतों की खोज करने या सामग्री के साथ सार्थक तरीके से जुड़ने की अनुमति नहीं देता है।

7. माता–पिता की सीमित भागीदारी –

अभिभावकों की सहभागिता में बाधाएं– भाषा के बारे में जागरूकता की कमी और शिक्षा प्रणाली के साथ नकारात्मक अनुभव शिक्षकों के बीच प्रभावी सहयोग में बाधा डालते हैं।

दिव्यांग छात्रों के अभिभावकों के साथ अपर्याप्त संवाद, उनके बच्चों की आवश्यकताओं और अधिकारों की वकालत करने की उनकी क्षमता में बाधा डालता है।

8. सांस्कृतिक और भाषाई बाधाएँ –

स्कूल अलग–अलग संस्कृतियों को नहीं समझते या उनका सम्मान नहीं करते, जिससे भाषा संबंधी बाधाएँ या संचार संबंधी कठिनाइयाँ पैदा होती हैं।

इसलिए अलग–अलग सांस्कृतिक और भाषाई पृष्ठभूमि के छात्रों को समावेशी शिक्षा में शामिल होना मुश्किल लगता है।

विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं के छात्र अक्सर उपेक्षित महसूस करते हैं, क्योंकि उनकी पृष्ठभूमि को समझने के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं होते, उनकी भाषाओं में मदद करने वाली सेवाएं नहीं होती, या ऐसे शिक्षक नहीं होते जो छात्रों को सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील महत्व समझाने में सक्षम हों।

9. अंतवैयक्तिक संबंधों और सामाजिक समायोजन संबंधी समस्याएँ –

घर में निरंतर हताशा और बहिष्कार का वातावरण गंभीर कुसमायोजन को जन्म देता है। एक दिव्यांग बालक माता–पिता के बीच कलह की जड़ बन सकता है। उसकी कमियों के लिए दोनों ही बहुधा एक–दूसरे पर दोषारोपण कर सकते हैं।

माता पिता के बीच ऐसी फूट तथा भाइयों– बहनों की दिव्यांग व्यक्ति के प्रति अरुचि से उस व्यक्ति में हीनता की भावना और अधिक तीव्र हो जाती है।

अच्छे वयरक संबंध, अच्छे प्रथम संबंध (गों और बच्चे के बीच) पर बहुत निर्भर करते हैं। अंधे शिशु की देखभाल में पारस्परिक आकर्षण विकसित नहीं हो पाता, जिससे बाद में समायोजन की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

दूसरों द्वारा उपेक्षा और दुर्व्यवहार के कारण दिव्यांग व्यक्ति में समाज विरोधी लक्षण, जैसे विडचिड़ापन, आपा खो देना आक्रामकता आदि प्रकट हो जाते हैं और वह बदमजाज बन जाता है। दिव्यांग व्यक्ति को छेडने तथा आलोचना करने से उसका स्वाभिमान कम होता है।

10. मानसिक कार्यप्रणाली –

किसी भी कार्य को पूर्ण कर लेने के बाद उसकी प्रगति का मापन अत्यंत आवश्यक होता है जिससे उसकी मानसिक कार्य प्रणाली के द्वारा इसका आकलन किया जाता है।दिव्यांगता के साथ जीने के भावनात्मक बोझ को कम करके नहीं आंका जाना चाहिए। व्यक्तियों को अवसाद, चिंता और सामाजिक अलगाव की उच्च दर का सामना करना पड़ सकता है। दिव्यांगता की अनूठी चुनौतियों के अनुरूप मानसिक स्वास्थ्य सहायता समग्र कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है।

11. व्यवहारगत समस्याएँ –

समाज और परिवार के दोषपूर्ण दृष्टिकोण से जैसे अस्वीकृति, अतिरक्षण और अति अपेक्षा के कारण अक्षम व्यक्तियों में कई संवेगात्मक और व्यवहारगत समस्याएँ, जैसे आक्रमकता, सिर पीटना, झल्लाहट आदि विकसित हो जाती हैं।

शारीरिक अक्षमता या दृष्टि–दिव्यांगता वाले लोगों की तुलना में मानसिक दिव्यांगता वाले व्यक्ति प्रतिक्रिया स्वरूप अधिक उग्र हो जाते हैं। माता–पिता / अभिभावकों और अध्यापकों को चाहिए कि वे दिव्यांग व्यक्तियों को स्वीकार करने व समाज से कटकर अलग–थलग न पड़ जाने के लिए अनुकूल दृष्टिकोण का निर्माण करने का प्रयास करें। समाज के उपयुक्त दृ ष्टिकोण के बिना माता–पिता के लिए, दिव्यांग बालकों का पालन–पोषण करना संभव नहीं होगा और न ही वयस्क दिव्यांग व्यक्ति स्वतंत्रतापूर्वक जीवन का आनंद उठा सकेंगे, यहाँ तक कि वे अपनी वास्तविक क्षमताओं के अनुरूप कार्य भी नहीं कर पाएँगे।

अतिरक्षण का दूसरा नुकसानकारी प्रभाव यह है कि माता–पिता दिव्यांग बालक की एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में वृद्धि नहीं होने देते। जो वयस्क अपने बचपन में आवश्यकता सेअधिक सुरक्षा की छाँह में पले हों, वे प्रायः अपरिपक्व, एवं असुरक्षित महसूस करते है । स्वयं निर्णय नहीं ले पाते और सदा दूसरों पर निर्भर रहते हैं। माता–पिता की अति अपेक्षाएँ भी बालक के आत्मविश्वास में कमी और असुरक्षा लाती है। उस बालक में कई अन्य योग्यताएँ हो सकती हैं किंतु अभिभावकों के निरंतर आलोचनापूर्ण व्यवहार से और बार–बार टोकाटाकी करते रहने से उसमें गंभीर हीनता की भावना घर कर जाएगी। यदि दिव्यांग व्यक्तियों को उचित प्रोत्साहन, आरंभ से ही उद्दीपन और निर्देशन प्राप्त होता रहे तो अधिकतर दिव्यांग समाजोपयोगी और स्वतंत्र जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

12. रोजगार संबंधी समस्याएँ –

क्या दिव्यांगता वाले व्यक्तियों को नौकरी दी जा सकती है? शारीरिक दिव्यांगता वाले व्यक्तियों और दूसरे पुरानी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं वाले व्यक्तियों को उनकी योग्यताओं के अनुसार व्यवसाय में या काम पर लगाया जा सकता है। यदि उनकी सुरक्षा के उचित उपाय किए जाएँ और उनकी दिव्यांगता से उत्पन्न संभावित खतरों से बचाया जाए, तो वे उत्पादकता बढ़ाने में अपना पूर्ण योगदान दे पाएँगे। रोजगार देने के मामले में दिव्यांग व्यक्तियों के साथ भेदभाव बरता जाता है। ''हम स्वभावतःशारीरिक रूप से पीड़ित को नियुक्ति नहीं देते, जब कि हमें पूर्णतः स्वस्थ व्यक्ति उपलब्ध हैं।''

नियोक्ताओं के ऐसे विचार दिव्यांग व्यक्तियों को कार्य के उपयुक्त होने के बावजूद ग्लानि और निराशा के सागर में गोते लगाते छोड़ देते हैं और उनके मन–मस्तिष्क में असंतोष व्याप्त हो जाता है।'दिव्यांग व्यक्ति कार्य करने के लिए उपयुक्त सिद्ध नहीं होंगे' यह दृष्टिकोण रोजगार बाजारों में बाधाग्रस्त व्यक्तियों के प्रवेश को रोकता है। इससे उनमें कई प्रकार की संवेगात्मक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

13. जागरूकता में कमी –

सरकार द्वारा दिव्यांग व्यक्तियों की स्थिति में सुधार के लिये कई सराहनीय पहलों की शुरुआत की गई है।हालाँकि सरकार द्वारा सुगम्य भारत अभियान (Accessible India Campaign) के तहत सभी मंत्रालयों को दिव्यांग व्यक्तियों के लिये अपने भवनों इमारतों को सुलभ बनाने का निर्देश दिये जाने के बाद भी वर्तमान में अधिकांश भवन दिव्यांग व्यक्तियों के लिये अनुकूल नहीं हैं।

इसी प्रकार 'दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016' के तहत सरकारी नौकरियों और उच्च शिक्षा संस्थानों में दिव्यांग व्यक्तियों के लिये आरक्षण का प्रावधान किया गया है, परंतु वर्तमान में इनमें से अधिकांश पद खाली हैं। भारत 'दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र अभिसमय' (United Nations Convention on the Rights of Persons with Disabilities&UNCRPD) का भी हिस्सा है।

14. सामान्य शिक्षा प्रणाली से दूर –

ऐतिहासिक रूप से, दिव्यांग बच्चों को सामान्य शिक्षा प्रणाली से बाहर रखा गया है और उन्हें 'विशेष स्कूलों' में रखा गया है।

कुछ मामलों में, उन्हें उनके परिवारों से अलग कर दिया जाता है और लंबे समय तक आवासीय संस्थानों में रखा जाता है, जहाँ उन्हें समुदाय से अलग–थलग करके शिक्षा दी जाती है, अगर उन्हें शिक्षा मिलती भी है।

दोनों प्रथाएँ कई क्षेत्रों में जारी हैं, उदाहरण के लिए, पूर्वी यूरोप में दुनिया में संस्थागत बच्चों की सबसे अधिक संख्या है और दिव्यांग बच्चे के अन्य बच्चों की तुलना में संस्थागत होने की संभावना लगभग 17 गुना अधिक है ।

15- शिक्षा में बाधा –

दिव्यांग लोगों द्वारा शिक्षा के लिए सामना की जाने वाली महत्वपूर्ण बाधाओं के प्रभाव को दर्शाते हैं, जिनमें शामिल हैंः शारीरिक रूप से दुर्गम स्कूल भवनों और अनुपयुक्त शिक्षण सामग्री दोनों के संदर्भ में पहुंच की कमी के कारण से ही है जिसमेंभेदभाव और पूर्वाग्रह जो दिव्यांग लोगों को दूसरों के समान शिक्षा प्राप्त करने से रोकता है मुख्यधारा के स्कूल से बहिष्कृत या अलग कर दिया जाना (जिसे 'नियमित स्कूल' भी कहा जाता है) जिससेशिक्षा की निम्न गुणवत्ता , जिसमें मुख्यधारा की व्यवस्थाएं भी शामिल हैं, जहां दिव्यांग बच्चों को मौजूदा गैर–समावेशी प्रणाली में 'एकीकृत' कर दिया गया है ।

16. सामाजिक कलंक और भेदभाव –

दिव्यांगता के बारे में पूर्वाग्रह और गलत धारणाएँ दिव्यांग लोगों के सामाजिक हाशिए पर जाने में योगदान करती हैं।

रूढ़िबद्ध धारणाएँ शिक्षा, रोजगार और सामाजिक एकीकरण के उनके अवसरों में बाधा डाल सकती हैं, जिससे बहिष्कार और अलगाव का चक्र चलता रहता है।

17. तकनीकी अंतराल –

जबकि प्रौद्योगिकी में दिव्यांग व्यक्तियों को सशक्त बनाने की क्षमता है, लेकिन इसकी पहुँच में एक महत्वपूर्ण अंतर है। सभी सहायक प्रौद्योगिकियाँ सस्ती या आसानी से उपलब्ध नहीं हैं, जिससे दिव्यांग लोगों की तकनीकी प्रगति की पूरी श्रृंखला का लाभ उठाने की क्षमता सीमित हो जाती है।

18. परिवहन चुनौतिया –

वर्तमान समाज में दिव्यांग बालक को सार्वजनिक परिवहन प्रणाली अक्सर दिव्यांग व्यक्तियों की जरूरतों को ध्यान में रखकर नहीं बनाई जाती। व्हीलचेयर रैंप और श्रव्य घोषणाओं जैसी अपर्याप्त सुविधाएँ स्वतंत्र गतिशीलता में बाधाएँ पैदा करती हैं।सार्वजनिक स्थानों, परिवहन और इमारतों तक पहुँच दिव्यांग लोगों के लिए एक सतत चुनौती बनी हुई है। अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा और सार्वभौमिक रूप से डिजाइन किए गए वातावरण की कमी अक्सर बाधाएँ पैदा करती हैं, जिससे दिव्यांग व्यक्तियों की गतिशीलता और स्वतंत्रता सीमित हो जाती है।

निष्कर्ष –

वर्तमान समाज में दिव्यांग बालक की परिवारिक समस्या को एक समस्या नमान कर उसकोसामाजिक जिम्मेदारी मानना होगा । जिससे दिव्यांग बालक अपने आप को औरो से अलग न समझे। दैनिक जीवन में ढालना होगाएवंदिव्यांग बालक समाज द्वारा निर्मित है इसे तोड़े तोड़ने का प्रावधान करें बढ़ाएं ना करें । बच्चों को जरूरत के साथ सामंजस्य बिठाना जिससे सामाजिक बाधाएं भौतिक तथा व्यवहार संबंधी हो सकती है । इसे दूर करने का प्रयास करें जिसके साथ मिलकर सामान्य बच्चों की तरह प्रत्येक बच्चे के लिए लाभदायक हो और अच्छा व्यवहार भी समावेशित करें जिससे विशेष शैक्षिक अवसर, योजनाओं ,उपकरणों इत्यादि आवश्यकता वाली दिव्यांग बालक कोउक्त समाधानों को ध्यान में रखने पर ही हम इन दिव्यांग बच्चों के लिए शाला, घर और समाज में बाधारहित वातावरण का निर्माण कर पायेंगे और इन्हें अध्यापन के क्षेत्र में पूर्ण रूप से समावेशित कर पायेंगे। इन बच्चों के लिए बाधारहित वातावरण का निर्माण करना अति आवष्यक होगा।

इन बच्चों में आत्मविश्वास तथा विकास के लिए सभी स्तरों पर बाघा रहित एवं विश्वासपूर्ण वातावरण का निर्माण किया जाना होगा। उपरोक्त समाधान पर्याप्त नहीं हैं अपनी सूझबूझ एवं अनुभव से आपको ऐसा वातावरण तैयार करना होगा, जिससे इन बच्चों को समावेशित कर उनकी भागीदारी सुनिश्चित की जा सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. दिव्यांग बच्चों की शिक्षा – राहुल गुप्ता
2. शिक्षा मनोविज्ञान – भाई योगेंद्र जीत
3. विविधता, समावेशी शिक्षा और जेण्डर(NCERT D.El.Ed. Book)
4. https://www.kailasheducation.com
5. यूनिसेफ, 2012
6. teachmint@wp
7. https://viklangta.com/
8. https://www.lsd.law/
9. https://www.drishtiias.com/hindi/
10. https://www.unicef.org/
11. www.sriramakrishnahospital.com.